Panchayati Raj
पंचायतीराज

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

उत्तराखण्ड सरकार

कूड़ा

जैविक एवं अजैविक कूड़े को अलग अलग करने से समस्या का समाधान सम्भव है

जन जन तक पहुंचे पैगाम, स्वच्छ पंचायत हो अपनी पहचान

निदेशालय पंचायतीराज, उत्तराखण्ड
सहस्त्रधारा रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड) दूरभाष : 0135-2607106

प्रश्न– क्या कूड़े से आप परेशान हैं ?

उत्तर– प्राय: हमारे घरों से जनित कूड़ा और उसका निस्तारण एक समस्या बन जाती है विशेषकर जब कोई ऐसी व्यवस्था उपलब्ध न हो, जो समग्र रूप से इसका उपाय न कर दे।

प्रश्न– क्या आप जानते हैं आपके कूड़े का क्या होता है ?

उत्तर– सामान्यत: एक बार कूड़ा घर से निकल जाये तो हम इस बात पर विचार नहीं करते कि इस अपशिष्ट का क्या होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कूड़े का इधर उधर फेंक दिया जाता है। अर्थात हमारा अपशिष्ट ग्रामीण परिवेश को विकृत करता है व पर्यावरण की समस्या बन जाता है।

प्रश्न– कूड़े के क्या होते हैं दुष्परिणाम ?

उत्तर– कूड़े के ढ़ेर जहाँ ''दृष्टया प्रदूषण''उत्पन्न करते हैं वहीं मक्खी, मच्छर व अन्य कीटों के लिये आदर्श परिस्थिति उत्पन्न करते हैं जिससे बीमारियों के फैलने का भय रहता है। जिस कूड़े को हम छोड़ आये थे वही हम तक वापस बीमारियों के रूप में आता है, हम ही इस स्थिति के लिये जिम्मेदार हैं।

प्रश्न– क्या कूड़े के ढ़ेरों में आग लगा देनी चाहिए ?

उत्तर– कूड़ा तापमान व नमी में गलता सड़ता है व मीथेन जैसी गैस का भी उत्सर्जन करता है, यह एक ज्वलनशील गैस है इसके साथ ही सूखा कूड़ा जिसमें कागज व प्लास्टिक होता है जलाने पर जहरीली गैस उत्पन्न करता है जो वायु प्रदूषण करती है व श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ फैलाती हैं। हम एक समस्या जिसे नियंत्रित कर सकते है जलाने पर अनियंत्रित कर देते हैं जिससे वायु प्रदुषण होता है।

प्रश्न– क्या कूड़े के ढेर पशुओं पर प्रतिकूल असर डालते हैं ?

उत्तर– हमारे द्वारा निस्तारित अपशिष्टों में खाद्य पदार्थ भी होते है आवारा पशु जैसे गायें, सुअर व कुत्ते इन ढेरों को उल्टा पलटा कर के कीड़ो को फैलाते है और उसमें से भोज्य पदार्थ को खाते हैं। कुछ क्षेत्रों में जंगली जानवर भी अपशिष्टों के ढेर में भोज्य पदार्थ ढूंढते हैं, इससे जैव विविधता पर भी असर पड़ता है।